International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 6, November-December 2026

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में वित्तीय उत्तोलन एवं लाभप्रदता के मध्य संबंध: चयनित सार्वजनिक और निजी बैंकों का दस वर्षीय अध्ययन

मधु सूदन जांगिड [1], डॉ. मंजिला सिंगला [2],

[1]शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय हनुमानगढ़
[2]सहायक आचार्य, वाणिज्य विभाग, शोध पर्यवेक्षक, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय हनुमानगढ़

सारांश

यह शोधपत्र वित्त वर्ष 2016-17 से 2025-26 के दौरान नौ प्रमुख भारतीय बैंकों में उत्तोलन और वित्तीय निष्पादन के बीच संबंध की जाँच करता है। इसके लिए बैंक-वर्ष के कुल 90 प्रेक्षणों का विश्लेषण किया गया है। वित्तीय निष्पादन को प्रति अंश आय (EPS), NPM, CPM और ROTA के माध्यम से, जबकि उत्तोलन को ऋण-इक्विटी अनुपात (DER), ICR, DAR, वित्तीय उत्तोलन और परिचालन उत्तोलन के माध्यम से मापा गया है। इन संबंधों की दिशा, प्रबलता तथा व्यावहारिक अर्थ स्पष्ट करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, पियर्सन सहसंबंध और सरल द्विचरीय प्रतिगमन का उपयोग किया गया है। प्राप्त साक्ष्य दर्शाते हैं कि DER, DAR और वित्तीय उत्तोलन का मार्जिन-आधारित लाभप्रदता तथा परिसंपत्तियों पर प्रतिफल से निरंतर ऋणात्मक संबंध है, जबकि ICR का निष्पादन से प्रबल धनात्मक संबंध है। समेकित नमूने में परिचालन उत्तोलन का सांख्यिकीय संबंध कमजोर पाया गया है। निष्कर्ष संकेत देते हैं कि केवल उत्तोलन की मात्रा की तुलना में उसकी गुणवत्ता और उससे जुड़े वित्तीय दायित्वों को पूरा करने की क्षमता अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। चूँकि यह प्रेक्षण-आधारित विश्लेषण है, इसलिए परिणामों को कारण-कार्य संबंध का प्रमाण नहीं, बल्कि पारस्परिक संबद्धता के रूप में समझा गया है।

मुख्य शब्द : उत्तोलन, लाभप्रदता, ऋण-इक्विटी अनुपात, ROTA, EPS, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक

1. प्रस्तावना

बैंकिंग मूलतः उत्तोलन पर आधारित गतिविधि है। जमाराशियाँ, उधार तथा अन्य देयताएँ आय अर्जित करने वाली परिसंपत्तियों के बड़े हिस्से का वित्तपोषण करती हैं। इसलिए वित्तीय उत्तोलन का उच्च स्तर न तो असामान्य है और न ही अनिवार्य रूप से अवांछनीय। विश्लेषण का प्रमुख प्रश्न यह है कि उत्तोलन का देखा गया स्तर और स्वरूप लाभप्रदता को सहारा देता है अथवा बैंकों पर ऐसा वित्तीय दबाव डालता है जो उनके निष्पादन को कमजोर करता है। भारतीय बैंकिंग प्रणाली इस अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयोगी संदर्भ प्रदान करती है, क्योंकि सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक व्यापक रूप से समान विनियामक परिवेश में काम करते हैं, किंतु स्वामित्व, ऐतिहासिक पुनर्पूंजीकरण, अभिशासन से जुड़े प्रोत्साहनों, परिसंपत्ति-गुणवत्ता के अनुभव और परिचालन मॉडलों के मामले में भिन्न होते हैं। इसलिए उत्तोलन को केवल एक अनुपात के बजाय बहुआयामी अवधारणा मानने वाला अध्ययन उत्तोलन और निष्पादन के संबंध का अधिक यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत कर सकता है।

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 6, November-December 2026

वर्तमान शोधपत्र में विकसित और सत्यापित आँकड़ा-समूह का उपयोग किया गया है। इसमें पाँच सार्वजनिक क्षेत्र के और चार निजी क्षेत्र के बैंकों का दस वित्तीय वर्षों तक अध्ययन किया गया है। निष्पादन के चार संकेतकों के उपयोग से शेयरधारकों की प्रति-शेयर आय, लाभ मार्जिन तथा परिसंपत्ति-दक्षता के बीच अंतर स्पष्ट किया जा सकता है। इसी प्रकार उत्तोलन संबंधी चर पूँजी-संरचना की तीव्रता, ब्याज दायित्वों को चुकाने की क्षमता और परिचालन संवेदनशीलता को अलग-अलग दर्शाते हैं।

2. साहित्य समीक्षा एवं सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

पूँजी-संरचना को समझने का प्रारंभिक आधार मोदिग्लियानी-मिलर का पारंपरिक सिद्धांत है। अत्यंत प्रतिबंधात्मक मान्यताओं के अंतर्गत वित्तपोषण के स्रोतों का मिश्रण फर्म के मूल्य को प्रभावित नहीं करता; किंतु कर, वित्तीय संकट की लागत और सूचना-असममिति को शामिल करने पर उत्तोलन संबंधी निर्णय आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो जाता है। ट्रेड-ऑफ सिद्धांत के अनुसार उत्तोलन एक सीमा तक लाभदायक हो सकता है, पर वित्तीय जोखिम बढ़ने पर उसकी लागत भी लगातार बढ़ती है। बैंकिंग के संदर्भ में सामान्य कॉरपोरेट वित्त सिद्धांतों का सावधानीपूर्वक अनुप्रयोग आवश्यक है। फिर भी ऋण-इक्विटी अनुपात (DER), ऋण–परिसंपत्ति अनुपात (DAR) और वित्तीय उत्तोलन यह दर्शाते हैं कि इक्विटी आधार किस सीमा तक देयता-वित्तपोषित अधिक बड़ी बैलेंस शीट को सहारा देता है, जबकि ब्याज आवरण अनुपात (ICR) ब्याज दायित्वों का वहन करने के लिए आय की क्षमता को मापता है। विभिन्न देशों के अनुभवजन्य अध्ययनों से मिश्रित साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। उत्तोलन के प्रभाव की दिशा और परिमाण नमूने की संरचना, निष्पादन के माप तथा अनुसंधान पद्धति पर निर्भर करते हैं। साहित्य में यह विविधता एक साथ कई निष्पादन और उत्तोलन संकेतकों के उपयोग तथा परिणामों की भारतीय बैंकिंग के संस्थागत संदर्भ में व्याख्या करने की आवश्यकता को बल देती है।

3. अनुसंधान-अंतराल

- भारतीय बैंकिंग संबंधी अध्ययन प्रायः उत्तोलन के केवल एक प्रतिनिधि संकेतक या लाभप्रदता के एक माप पर निर्भर रहते हैं। इससे यह जानना कठिन हो जाता है कि कोई निष्कर्ष वैकल्पिक परिभाषाओं के अंतर्गत भी स्थिर रहता है या नहीं।
- हाल के दस-वर्षीय कालखंड में सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र के बैंकों को एक साथ शामिल करने वाले तुलनात्मक साक्ष्य, केवल एक क्षेत्र पर केंद्रित अध्ययनों की अपेक्षा सीमित हैं।
- ब्याज आवरण को प्रायः ऋण-शोधन क्षमता के माप के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, किंतु उसी निष्पादन रूपरेखा में DER, DAR और वित्तीय उत्तोलन के साथ उसका विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है।
- बैंकिंग आँकड़ों में परिचालन उत्तोलन अत्यधिक अस्थिर होता है। इसलिए बैलेंस शीट-आधारित उत्तोलन के समान उसकी व्याख्या करने के बजाय उसका पृथक विश्लेषण आवश्यक है।

4. अध्ययन के उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ

- नमूने में शामिल बैंकों के उत्तोलन और वित्तीय निष्पादन के बीच संबंध का अध्ययन करना।

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 6, November-December 2026

➢ यह जाँचना कि DER, ICR, DAR, वित्तीय उत्तोलन तथा परिचालन उत्तोलन का प्रति अंश आय (EPS), NPM, नकद लाभ मार्जिन (CPM) और परिसंपत्तियों पर प्रतिफल (ROTA) से संबंध है या नहीं।

➢ यह पहचानना कि कौन-सा उत्तोलन संकेतक बैंक निष्पादन के साथ सबसे प्रबल और सर्वाधिक सुसंगत संबंध दर्शाता है।

मुख्य शून्य परिकल्पना यह है कि उत्तोलन संकेतकों और नमूने में शामिल बैंकों के वित्तीय निष्पादन संकेतकों के बीच सांख्यिकीय रूप से कोई महत्त्वपूर्ण संबंध नहीं है। प्रत्येक उत्तोलन–निष्पादन युग्म के लिए संकेतक-विशिष्ट शून्य परिकल्पना का परीक्षण किया गया है।

5. अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन में दीर्घकालिक द्वितीयक आँकड़ा-आधारित अनुसंधान अभिकल्प अपनाया गया है। नमूने में भारतीय स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, केनरा बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक और कोटक महिंद्रा बैंक शामिल हैं। अध्ययन अवधि वित्त वर्ष 2016-17 से 2025-26 तक है और इसमें बैंक-वर्ष के 90 सुमेलित प्रेक्षण प्राप्त होते हैं।

अवधारणा	चर	व्याख्या
वित्तीय निष्पादन	EPS, NPM, CPM, ROTA	शेयरधारकों की आय, लाभप्रदता मार्जिन और परिसंपत्ति-प्रतिफल दक्षता
उत्तोलन	DER, DAR, वित्तीय उत्तोलन	बैलेंस शीट-आधारित उत्तोलन की तीव्रता
ब्याज आवरण	ICR	ब्याज भार की तुलना में आय अर्जित करने की क्षमता
परिचालन संवेदनशीलता	परिचालन उत्तोलन	परिचालन गतिविधि में परिवर्तन के प्रति परिचालन लाभ की संवेदनशीलता

विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, पियर्सन सहसंबंध और सरल द्विचरीय प्रतिगमन का उपयोग किया गया है। प्रतिगमन परिणामों को सहसंबंध विश्लेषण की व्याख्या के पूरक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, न कि कारणात्मक प्रभाव के अनुमानों के रूप में।

6. वर्णनात्मक परिणाम

निष्पादन चर	N	माध्य	माध्यिका	मानक विचलन	CV (%)
EPS	90	19.15	14.13	25.35	132.39
ROTA (%)	90	0.85	0.91	0.85	100.04
CPM (%)	90	11.30	12.56	10.11	89.49
NPM (%)	90	10.18	11.64	10.08	99.06

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 6, November-December 2026

उत्तोलन संकेतक	N	माध्य	माध्यिका	मानक विचलन	CV (%)
DER (गुना)	90	11.25	12.21	4.16	36.96
ICR (गुना)	90	1.32	1.31	0.33	25.08
DAR (%)	90	87.38	89.09	4.12	4.71
वित्तीय उत्तोलन (गुना)	90	12.69	13.55	4.23	33.36
परिचालन उत्तोलन (गुना)	90	-0.06	1.21	19.92	अर्थपूर्ण नहीं*

वर्णनात्मक परिणामों से 90 प्रेक्षणों में वित्तीय निष्पादन की पर्याप्त विविधता स्पष्ट होती है। EPS में सापेक्षिक प्रसरण सर्वाधिक है, जबकि NPM, CPM और ROTA में भी उल्लेखनीय परिवर्तनशीलता पाई गई है। उत्तोलन संकेतकों में DAR तुलनात्मक रूप से स्थिर है, जबकि परिचालन उत्तोलन अत्यधिक उतार-चढ़ाव दर्शाता है। परिचालन उत्तोलन का औसत शून्य के बहुत निकट और ऋणात्मक होने के कारण उसके लिए पारंपरिक विचरण गुणांक की व्याख्या सार्थक नहीं है।

7. सहसंबंध विश्लेषण के परिणाम

उत्तोलन संकेतक	EPS	NPM	CPM	ROTA
DER	-0.386***	-0.764***	-0.768***	-0.798***
ICR	0.553***	0.968***	0.965***	0.967***
DAR	-0.372***	-0.763***	-0.763***	-0.800***
वित्तीय उत्तोलन	-0.373***	-0.760***	-0.763***	-0.795***
परिचालन उत्तोलन	0.172	0.166	0.167	0.154

*** 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण। परिचालन उत्तोलन के सहसंबंध गुणांक प्रचलित सार्थकता स्तरों पर सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण नहीं हैं।

DER का चारों निष्पादन संकेतकों के साथ ऋणात्मक संबंध है। EPS (-0.386) के साथ इसका संबंध मध्यम है, किंतु NPM (-0.764), CPM (-0.768) और ROTA (-0.798) के साथ प्रबल है। यह प्रवृत्ति संकेत करती है कि इक्विटी की तुलना में अधिक ऋण, प्रति-शेयर आय के मुकाबले परिचालन लाभप्रदता और परिसंपत्ति-दक्षता से अधिक मजबूती से संबद्ध है। DAR से लगभग समान परिणाम प्राप्त होता है। ROTA के साथ इसका सहसंबंध -0.800 है, जो समेकित सहसंबंध मैट्रिक्स का सबसे प्रबल ऋणात्मक गुणांक है। इसी प्रकार वित्तीय उत्तोलन का NPM, CPM और ROTA के साथ प्रबल ऋणात्मक संबंध है। संबंधित तीन उत्तोलन मापों में परिणामों की एकरूपता इस अनुभवजन्य निष्कर्ष को सुदृढ़ करती है कि इस नमूने में अधिक बैलेंस शीट-आधारित उत्तोलन का संबंध कम लाभप्रदता से है। ICR का संबंध विपरीत दिशा में पाया गया है। NPM, CPM और ROTA के साथ इसके सहसंबंध गुणांक क्रमशः 0.968, 0.965 और 0.967 हैं। ये असामान्य रूप से उच्च गुणांक दर्शाते हैं कि ब्याज दायित्वों के लिए आय का अधिक मजबूत आवरण बेहतर लाभप्रदता के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। EPS (0.553) के साथ भी ICR का धनात्मक और सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण संबंध है। परिचालन उत्तोलन की स्थिति भिन्न है। इसके पियर्सन सहसंबंध गुणांक 0.154 से 0.172

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 6, November-December 2026

के बीच हैं और सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। परिचालन उत्तोलन के अत्यधिक विस्तृत प्रसार को देखते हुए समेकित परिणाम संकेत करते हैं कि संपूर्ण नमूने में निष्पादन के साथ इसका संबंध न तो स्थिर है और न ही एकसमान।

8. **द्विचरीय प्रतिपगमन से प्राप्त साक्ष्य**

संबंध	β गुणांक	R^2	p-मान
DER -> NPM	-1.851	0.584	<0.001
DER -> CPM	-1.866	0.589	<0.001
DER -> ROTA	-0.163	0.637	<0.001
ICR -> NPM	29.404	0.937	<0.001
ICR -> CPM	29.420	0.932	<0.001
ICR -> ROTA	2.471	0.935	<0.001
DAR -> NPM	-1.867	0.582	<0.001
DAR -> CPM	-1.871	0.581	<0.001
DAR -> ROTA	-0.165	0.640	<0.001
FL -> NPM	-1.810	0.578	<0.001
FL -> CPM	-1.824	0.583	<0.001
FL -> ROTA	-0.159	0.632	<0.001

सरल प्रतिपगमन के परिणाम सहसंबंध विश्लेषण से प्राप्त साक्ष्यों की पुष्टि करते हैं। द्विचरीय रूप में अकेला DER, NPM, CPM और ROTA के लगभग 58-64 प्रतिशत विचरण की व्याख्या करता है, जबकि ICR 93 प्रतिशत से अधिक विचरण की व्याख्या करता है। इन उच्च मानों को इस बात का प्रमाण नहीं माना जाना चाहिए कि उत्तोलन निष्पादन का कारण है, क्योंकि साझा प्रवृत्तियाँ, बैंकों की विशेषताएँ और विपरीत कारणात्मकता द्विचरीय मॉडल की व्याख्यात्मक शक्ति को बढ़ा सकती हैं। यहाँ इनका महत्त्व वर्णनात्मक है: ये देखे गए संबंध की प्रबलता और निरंतरता दर्शाते हैं।

9. **वर्षवार निष्पादन का परिप्रेक्ष्य**

वित्त वर्ष	औसत EPS	औसत ROTA (%)	औसत CPM (%)	औसत NPM (%)
2016-17	9.53	0.69	8.47	7.52
2017-18	-9.41	0.01	0.42	-0.69
2018-19	1.44	0.27	3.69	2.60
2019-20	5.92	0.43	5.91	4.82
2020-21	12.69	0.75	10.56	9.43
2021-22	20.51	0.99	14.85	13.72
2022-23	26.36	1.14	17.19	14.78
2023-24	37.44	1.38	16.99	16.08
2024-25	42.90	1.47	17.81	16.91
2025-26	44.12	1.34	17.09	16.59

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 6, November-December 2026

वर्षवार औसत परिणाम उपयोगी संदर्भ प्रदान करते हैं। वित्त वर्ष 2017-18 में वित्तीय निष्पादन में तीव्र गिरावट आई और उसके बाद क्रमिक सुधार हुआ। वित्त वर्ष 2020-21 के बाद सुधार विशेष रूप से मजबूत हुआ। वर्ष 2025-26 में EPS 44.12 तक पहुँच गया, जबकि ROTA, CPM और NPM ने 2024-25 में अपने उच्चतम स्तर प्राप्त किए और अंतिम वर्ष में इनमें मामूली कमी आई। समय के साथ यह सुधार विश्लेषण में उल्लिखित उत्तोलन संकेतकों की सामान्य गिरावट के समानांतर हुआ, किंतु बहुचरीय पैनल नियंत्रणों के बिना इन समानांतर परिवर्तनों को कारणात्मक संबंध नहीं माना जाना चाहिए।

10. चर्चा

निष्कर्ष उत्तोलन की तीव्रता और उत्तोलन की गुणवत्ता के बीच अंतर को पुष्ट करते हैं। DER, DAR और वित्तीय उत्तोलन यह दर्शाते हैं कि इक्विटी की तुलना में बैलेंस शीट किस सीमा तक वित्तपोषित है; दूसरी ओर ICR दर्शाता है कि आय का प्रवाह वित्तीय दायित्वों का भार उठाने के लिए पर्याप्त रूप से मजबूत है या नहीं। आँकड़ों के अनुसार दूसरा आयाम बेहतर निष्पादन से अधिक निकटता से संबंधित ळें परिणाम इस सरलीकृत दृष्टिकोण का समर्थन नहीं करते कि बैंकों को हर स्थिति में उत्तोलन न्यूनतम कर देना चाहिए। आय अर्जित करने वाली परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए बैंकिंग देयताओं पर निर्भर करती है। इसके बजाय साक्ष्य संकेत करते हैं कि पर्याप्त आय-आवरण के बिना अत्यधिक बैलेंस शीट-आधारित उत्तोलन कम लाभप्रदता से संबंधित है। इसलिए कोई बैंक उच्च उत्तोलन के बावजूद वित्तीय दृष्टि से सुदृढ़ रह सकता है, बशर्ते आय-आवरण और परिसंपत्ति-गुणवत्ता मजबूत हों; तथापि इस नमूने में अधिक मजबूत ICR बेहतर निष्पादन का अधिक विश्वसनीय सह-संकेतक है। EPS का व्यवहार लाभ मार्जिन और परिसंपत्ति-प्रतिफल के मापों से अलग है। DER, DAR और FL के साथ इसके सहसंबंध अपेक्षाकृत कमजोर हैं। यह स्वाभाविक है, क्योंकि EPS शेयरों की संख्या, पुनर्पूंजीकरण, इक्विटी निर्गम और शेयरधारक स्तर के अन्य कारकों से प्रभावित होता है, जो मार्जिन या ROTA को सीधे प्रभावित नहीं करते।

11. प्रमुख निष्कर्ष

- समेकित नमूने में DER, DAR और वित्तीय उत्तोलन का EPS, NPM, CPM तथा ROTA के साथ महत्त्वपूर्ण ऋणात्मक संबंध है।
- ICR का प्रत्येक निष्पादन माप के साथ महत्त्वपूर्ण धनात्मक संबंध है, जो NPM, CPM और ROTA के मामले में विशेष रूप से प्रबल है।
- अनुभवजन्य साक्ष्य DER, ICR, DAR और वित्तीय उत्तोलन के लिए शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने का समर्थन करते हैं, किंतु समेकित परिचालन उत्तोलन के लिए नहीं।

12. निष्कर्ष

अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि चयनित बैंकों के वित्तीय निष्पादन के लिए उत्तोलन महत्त्वपूर्ण है, किंतु उसका स्वरूप भी उतना ही महत्त्व रखता है। अधिक बैलेंस शीट-आधारित उत्तोलन का संबंध कम लाभप्रदता से है, जबकि अधिक मजबूत ब्याज-आवरण बेहतर निष्पादन से जुड़ा है। इससे स्पष्ट होता है कि बैंक प्रबंधन को उत्तोलन का मूल्यांकन केवल उसकी मात्रा के आधार

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 6, November-December 2026

पर नहीं करना चाहिए; आय द्वारा वित्तीय दायित्वों का निर्वहन करने की क्षमता भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। निवेशकों और विश्लेषकों को ICR को गौण ऋण-शोधन अनुपात मानने के बजाय DER और DAR के साथ पढ़ना चाहिए। नियामकों के लिए ये निष्कर्ष पूँजीगत सुदृढ़ता और सतत आय-आवरण के महत्त्व को रेखांकित करते हैं।

13. अध्ययन की सीमाएँ एवं भावी अनुसंधान की संभावनाएँ

- अध्ययन नौ बड़े बैंकों के 90 प्रेक्षणों पर आधारित है; इसलिए इसके परिणामों को सभी भारतीय बैंकों पर लागू नहीं किया जाना चाहिए।
- सहसंबंध और द्विचरीय प्रतिगमन संबंध दर्शाते हैं, कारणात्मकता सिद्ध नहीं करते।
- भावी अनुसंधान में बैंक के आकार, परिसंपत्ति-गुणवत्ता, पूँजी पर्याप्तता और व्यापक आर्थिक परिस्थितियों को नियंत्रण चरों के रूप में शामिल करते हुए स्थिर-प्रभाव या यादृच्छिक-प्रभाव वाले पैनल मॉडलों का उपयोग किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. ब्रीली, आर. ए., मायर्स, एस. सी., एवं एलेन, एफ.(2013). कॉरपोरेट वित्त के सिद्धांत। मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन।
2. ब्रिघम, ई. एफ., एवं ह्यूस्टन, जे. एफ. (201). वित्तीय प्रबंधन के मूलभूत सिद्धांत। सेंगैज लर्निंग।
3. दामोदरन, ए. (2012). निवेश मूल्यांकन: किसी भी परिसंपत्ति का मूल्य निर्धारित करने के उपकरण और तकनीकें। जॉन वाइली एंड संस।
4. कांग, एच., एवं ली, एच. (2018). फर्म निष्पादन पर उत्तोलन का प्रभाव: कोरिया की सूचीबद्ध फर्मों से प्राप्त साक्ष्य। इमर्जिंग मार्केट्स फाइनेंस एंड ट्रेड, 54, 2785-2801।
5. मोदिग्लियानी, एफ., एवं मिलर, एम. एच. (1958). पूँजी की लागत, निगम वित्त और निवेश का सिद्धांत। अमेरिकन इकोनॉमिक रिव्यू, 48 (3), 261-297।
6. मोदिग्लियानी, एफ., एवं मिलर, एम. एच. (1963). कॉरपोरेट आयकर और पूँजी की लागत: एक संशोधन। अमेरिकन इकोनॉमिक रिव्यू, 53(3), 433-443।
7. मोघतादेरी, एम., असगरी, एन., एवं सादेगी, एम. (2017). वित्तीय निष्पादन पर पूँजी-संरचना का प्रभाव: ईरानी फर्मों से प्राप्त साक्ष्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फाइनेंशियल रिसर्च, 8(1), 126-135।
8. पांडेय, आई. एम. (2017). वित्तीय प्रबंधन 10वाँ संस्करण। विकास पब्लिशिंग हाउस।
9. रॉस, एस. ए., वेस्टरफील्ड, आर. डब्ल्यू., एवं जॉर्डन, बी. डी. (2016) कॉरपोरेट वित्त के मूलभूत सिद्धांत (11वाँ संस्करण)। मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन।
10. भारतीय रिजर्व बैंक। भारत के बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियाँ एवं वार्षिक प्रकाशन।
11. चयनित बैंक। (2016-17 से 2025-26)। वार्षिक प्रतिवेदन, लेखापरीक्षित वित्तीय विवरण एवं निवेशकों हेतु प्रकटीकरण।